नानी-माँ और विशाल कद्दू

एक बंगाली लोककथा

एक समय की बात है कि भारत के एक छोटे से गाँव में एक वृद्ध महिला रहती थी जिसे हर कोई नानी-माँ कह कर बुलाता था. उसे बागबानी अच्छी लगती थी और उसका सब्ज़ियों का बग़ीचा सारे गाँव में सबसे बढ़िया था. एक दिन उसे अपनी बेटी का पत्र मिला जो जंगल के दूसरी ओर रहती थी.

“कृपया मुझे मिलने आओ,” पत्र में लिखा था, “लंबे समय से मैं आप से नहीं मिली. मुझे आपकी बहुत याद आती है.”

और इसलिए नानी-माँ जंगल के दूसरी ओर जाने के लिए एक संकटमय यात्रा पर चल पड़ती है. रास्ते में उसका सामना तीन भूखे जानवरों के साथ हुआ: चालाक लोमड़ी, भयभीत करने वाला भालू और तगड़ा, धारीदार बाघ. क्या नानी-माँ अपनी बुद्धि से इन जानवरों से बच कर घर पहुँच पायेगी?

यह कहानी वीरता, चतुराई और प्रेम की कहानी है जो बच्चों को बहुत अच्छी लगेगी.

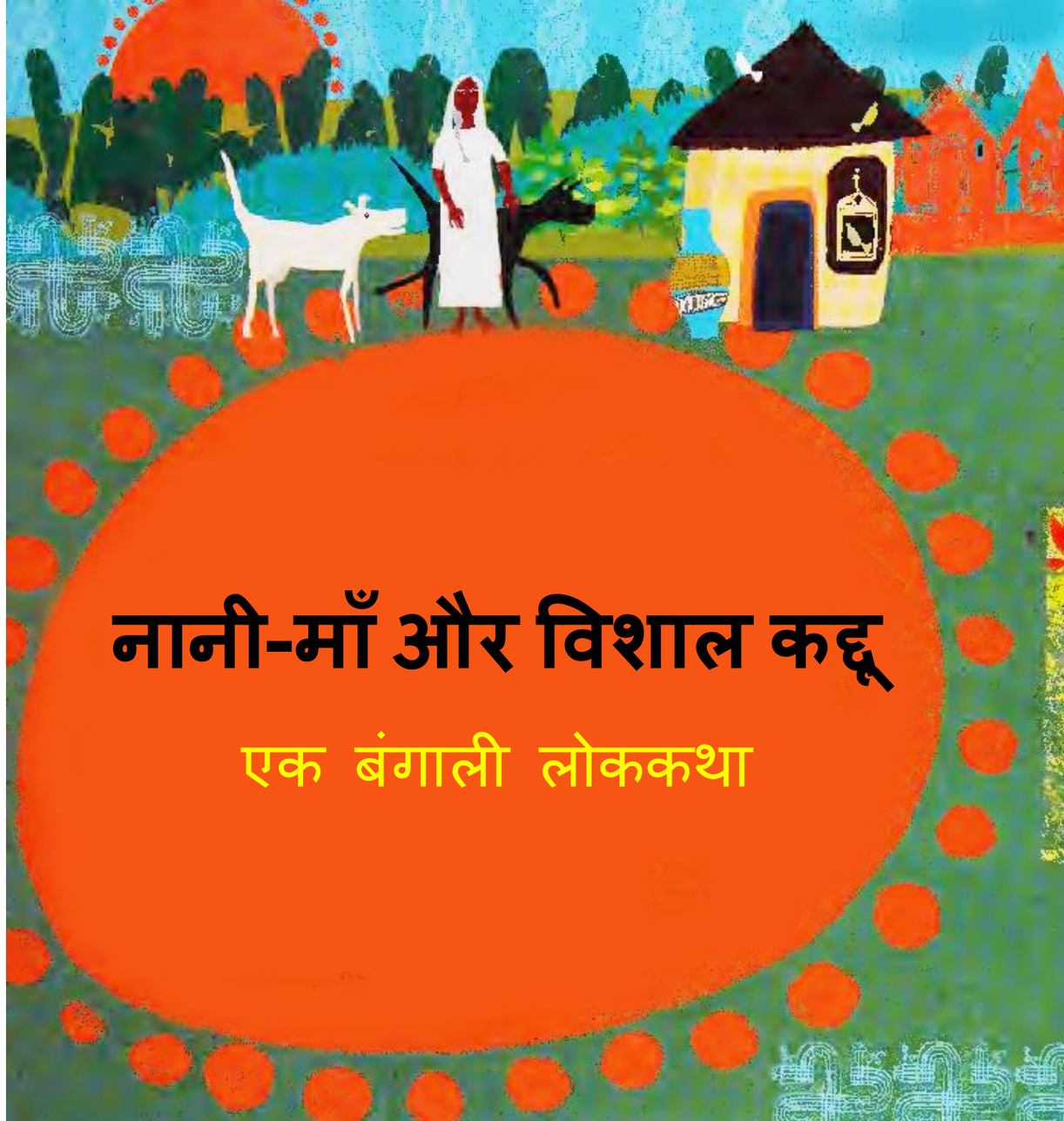

एक समय की बात है कि भारत के एक छोटे से गाँव में एक वृद्ध महिला रहती थी जिसे हर कोई नानी-माँ कह कर बुलाता था. उसे बागबानी बहुत प्रिय थी और उसका सब्ज़ियों का बग़ीचा सारे गाँव में सबसे बढ़िया था.

नानी-माँ अपनी छोटी कुटिया में अकेली रहती थी. कुटिया गाँव के किनारे पर एक विशाल, घने जंगल के पास थी. कभी-कभी जंगल में हाथियों के चलने की आवाज़, *थप-थप-थप*, या सूखे पत्तों में बड़ी छिपकलियों के रेंगने की आवाज़, *खश-खश-खश*, सुनाई देती थी.

लेकिन नानी-माँ कोई परवाह न करती थी क्योंकि उसकी रक्षा करने के लिए उसके पास दो वफादार कुत्ते थे, कालू और भोलू. वह बागबानी में भी उसकी सहायता करते थे.

एक दिन नानी-माँ को अपनी बेटी का एक पत्र मिला जो जंगल के दूसरी ओर रहती थी.

“कृपया मुझे मिलने आओ,” पत्र में लिखा था, “लंबे समय से मैं आप से नहीं मिली. मुझे आपकी बहुत याद आती है.”

नानी-माँ को भी अपनी बेटी की बहुत याद आती थी और उसने बेटी से मिलने का निर्णय लिया. जंगल के उस पार जाने में उसे थोड़ा भय लगता था क्योंकि वहाँ अनेक भयंकर पशु रहते थे. लेकिन उसने कहा, “कोई साहसिक कार्य किये बिना जीवन का क्या आनंद?”

उसने अपना सामान बाँध लिया और अपने कुत्तों को अलविदा किया. “चिंता न करना, बच्चों,” उसने कहा, “मैं शीघ्र ही लौट आऊँगी! बगीचे का ध्यान रखना न भूलना.” “*घीयू-घीयू!*” कुत्ते बोले. “हम नहीं भूलेंगे! सब जंगली जानवरों को हम भगा देंगे और हम आपकी पुकार भी सुनते रहेंगे. अगर कभी आप मुसीबत में फंस गईं तो झट से हमें बुलाना.”

जब नानी-माँ जंगल के बीच से जा रही थी, *खट-खट-खट*, तभी उसका सामना एक लाल रंग की चालाक लोमड़ी से हुआ.

“अह, नानी-माँ!” अपने दाँत निपोरते और होंठ चाटते हुए लोमड़ी ने कहा, “अरे, कितना अच्छा है कि आप उसी समय आई हैं जब मुझे इतनी भूख लगी है!”

नानी-माँ का दिल *धिप-धिप* करने लगा, लेकिन उसने लोमड़ी को यह पता न चलने दिया कि वह कितनी डरी हुई थी.

“अगर नाशते में तुम मुझे खाने का सोच रही हो तो वह एक गलत विचार है,” नानी-माँ ने कहा, “देखो मैं कितनी दुबली-पतली हूँ. जब मैं बेटी के घर से लौटूँगी तो मैं खूब मोटी हो जाऊँगी, क्योंकि वह बड़ी अच्छी बावर्ची है. अगर तुम मुझे खाना चाहती हो तो तब खा लेना.”

“आप की बात सही लगती है!” लोमड़ी ने कहा और नानी-माँ को जाने दिया.

नानी-माँ जंगल के अंदर चलती रही,
खट-खट-खट. जल्दी उसका सामना
एक झबरे, काले भालू से हुआ.

“अह, नानी-माँ!” अपने नाखून फैलाते हुए और उन्हें
पत्थर पर रगड़ कर तेज़ करते हुए भालू ने कहा,
“अरे, कितना अच्छा है कि आप उसी समय आई हैं जब
मुझे इतनी भूख लगी है!”

नानी-माँ का दिल धुक-धुक करने लगा लेकिन उसने
भालू को यह पता न चलने दिया कि वह कितनी डरी हुई थी.

“अगर दोपहर के भोजन में तुम मुझे खाने का सोच रहे
हो तो वह एक गलत विचार है,” नानी-माँ ने कहा,
“देखो मैं कितनी कमज़ोर हूँ. जब मैं बेटी के घर
से लौटूँगी तो मैं खूब स्वस्थ हो जाऊँगी,
क्योंकि वह बड़ी अच्छी बावर्ची है.
अगर तुम मुझे खानाचाहते हो
तो तब खा लेना.”

“आपकी बात सही लगती है,” भालू ने कहा और नानी-माँ को जाने दिया.

नानी-माँ जंगल के सबसे घने भाग में चल रही थी, *खट-खट-खट*. अचानक उसका सामना एक तगड़े, धारीदार बाघ से हुआ.

“अह, नानी-माँ!” नीचे झुकते और अपनी पूँछ ज़ोर-ज़ोर से पटकते हुए बाघ ने कहा, “अरे, कितना अच्छा है कि आप उसी समय आई हैं जब मुझे इतनी भूख लगी है!”

नानी-माँ का दिल *धुम-धुम* करने लगा लेकिन उसने बाघ को यह पता न चलने दिया कि वह कितनी डरी हुई थी.

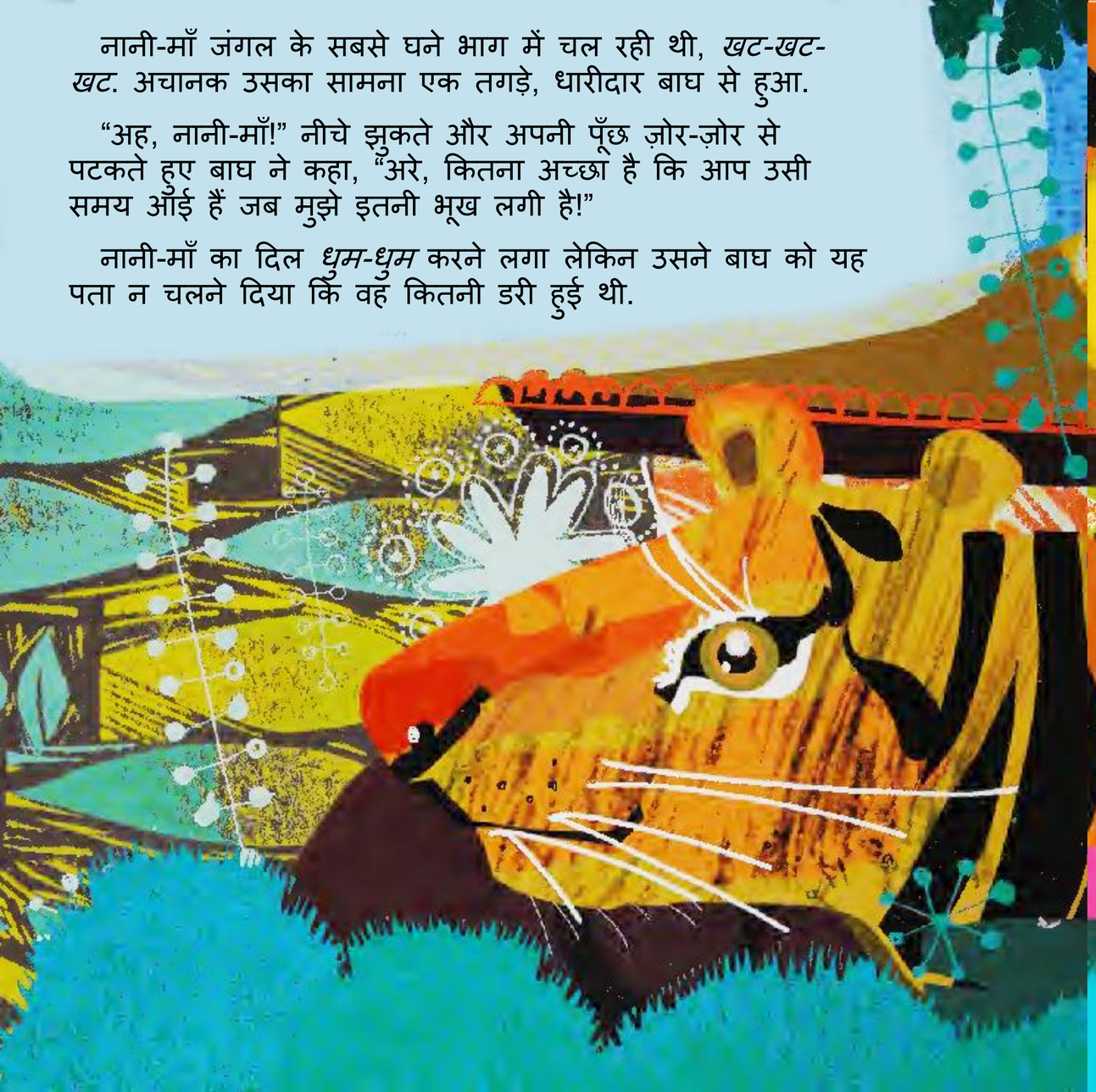

“अगर रात के भोजन में
तुम मुझे खाने का सोच रहे हो
तो वह एक गलत विचार है,” नानी-माँ ने
कहा, “देखो मेरे बदन बिलकुल मांसल नहीं है.
जब मैं बेटी के घर से लौटूँगी तो मैं खूब मोटी हो
जाऊँगी, क्योंकि वह बड़ी अच्छी बावर्ची है.
अगर तुम मुझे खाना चाहते हो तो तब खा लेना.”

“आपकी बात सही लगती है,” बाघ ने कहा और नानी-माँ को जाने दिया.

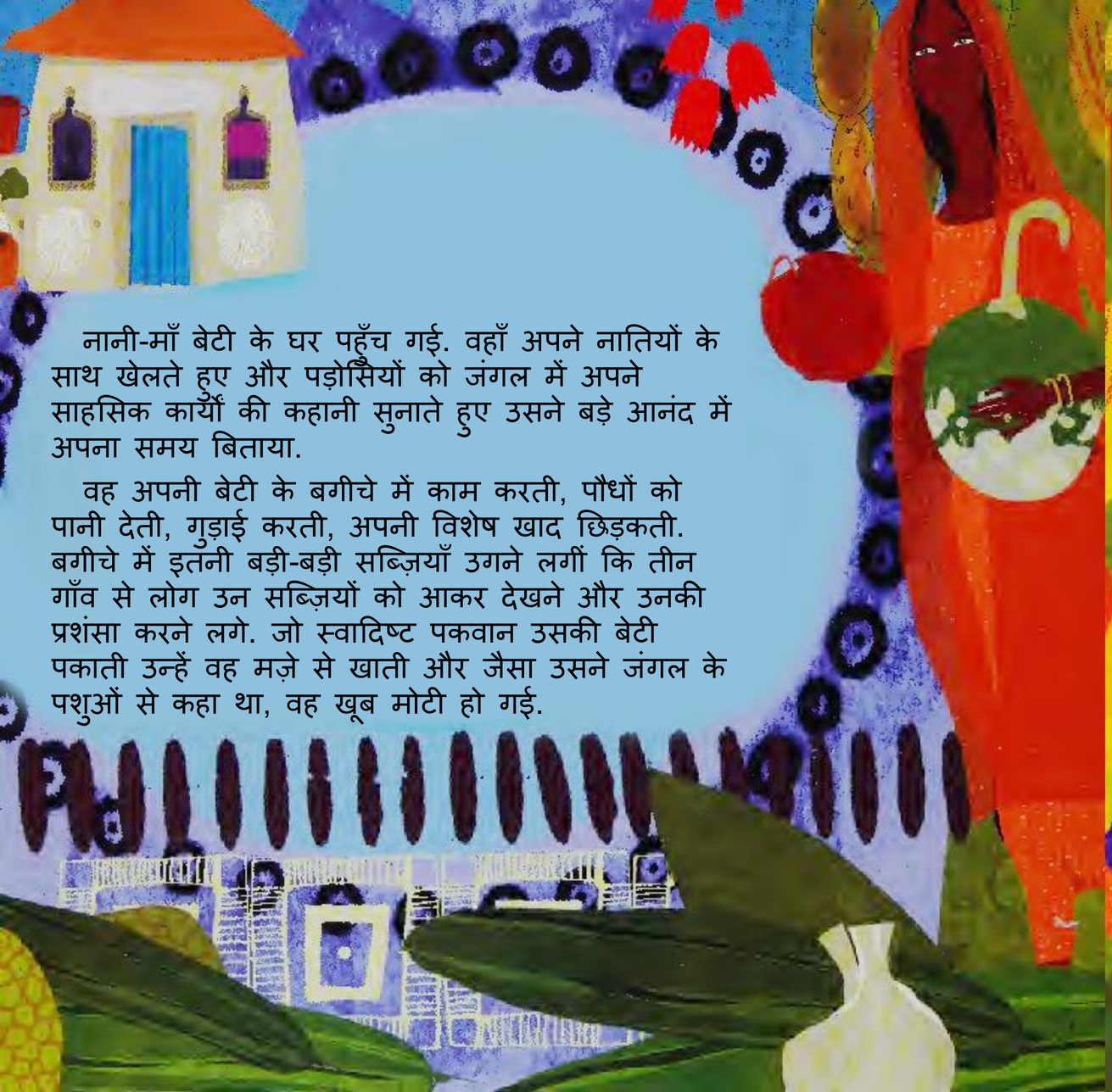

नानी-माँ बेटी के घर पहुँच गई. वहाँ अपने नातियों के साथ खेलते हुए और पड़ोसियों को जंगल में अपने साहसिक कार्यों की कहानी सुनाते हुए उसने बड़े आनंद में अपना समय बिताया.

वह अपनी बेटी के बगीचे में काम करती, पौधों को पानी देती, गुड़ाई करती, अपनी विशेष खाद छिड़कती. बगीचे में इतनी बड़ी-बड़ी सब्ज़ियाँ उगने लगीं कि तीन गाँव से लोग उन सब्ज़ियों को आकर देखने और उनकी प्रशंसा करने लगे. जो स्वादिष्ट पकवान उसकी बेटी पकाती उन्हें वह मज़े से खाती और जैसा उसने जंगल के पशुओं से कहा था, वह खूब मोटी हो गई.

लेकिन नानी-माँ को अपने कुत्तों की याद आ रही थी. वह सोचती कि क्या बगीचे की उन्होंने रखवाली की होगी या उन्होंने चूहों और पक्षियों को सब कुछ खाने दिया होगा, *कुतर-कुतर-कुत?*

आखिरकार, उसने अपनी बेटी से कहा, “अब मुझे घर लौट जाना चाहिए. कालू और भोलू मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं और मेरा बग़ीचा भी. लेकिन समस्या यह है कि जंगल में बाघ, भालू और लोमड़ी भी मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं! और इस बार मैं उनको बातों से चकमा न दे पाऊँगी.”

“चिंता न करो!” बेटी ने कहा. “हम कोई न कोई उपाय सोच लेंगे.”

दोनों बगीचे में आ गईं ताकि वह अच्छे ढंग से सोच सकें और जब उन्होंने एक विशाल कद्दू देखा तो वह समझ गईं कि क्या करना होगा.

बेटी ने सबसे बड़ा कद्दू उठाया और उसे बीच से खोखला कर दिया. नानी-माँ उस के अंदर बैठ गई. कद्दू आरामदायक था क्योंकि उसकी दीवारें गद्दे जितनी मोटी थीं और छिलका गैंडे की खाल जितना सख्त था. बेटी ने नानी-माँ को रास्ते में खाने के लिए उबले हुए चावल और इमली दे दी. फिर छिलके के कटे हुए भाग से उसने कद्दू को ढँक कर सिल दिया और गोंद लगा कर पूरी तरह चिपका दिया.

“कोई न जान पायेगा कि यह तुम हो,” बेटी ने कहा.

वह कद्दू को जंगल के किनारे ले गई और उसे बड़े ज़ोर से धक्का मारा. *गर-गर-गर-गर*! कद्दू जंगल के रास्ते पर लुढ़कने लगा.

कुछ समय बाद कद्दू जंगल के उस भाग में पहुँच गया जहाँ बाघ नानी-माँ की प्रतीक्षा कर रहा था. क्योंकि उसने इतना बड़ा कद्दू कभी देखा नहीं था, बाघ को समझ न आया कि वह क्या जीव था.

"कैसा अनोखा जीव है!" वह चिल्लाया.

उसने कद्दू के चारों ओर सूँघा. लेकिन क्योंकि कद्दू हर तरफ से पूरी तरह बंद था, बाघ नानी-माँ की गंध नहीं सूँघ पाया.

कद्दू के अंदर से नानी-माँ पतली, ऊँची आवाज़ में गाने लगी.

“मैं तो हूँ बस लुढ़कता कद्दू, गाता हूँ इक गाना.
क्या मुझ को धक्का दोगे, दूर है मुझ को जाना?”

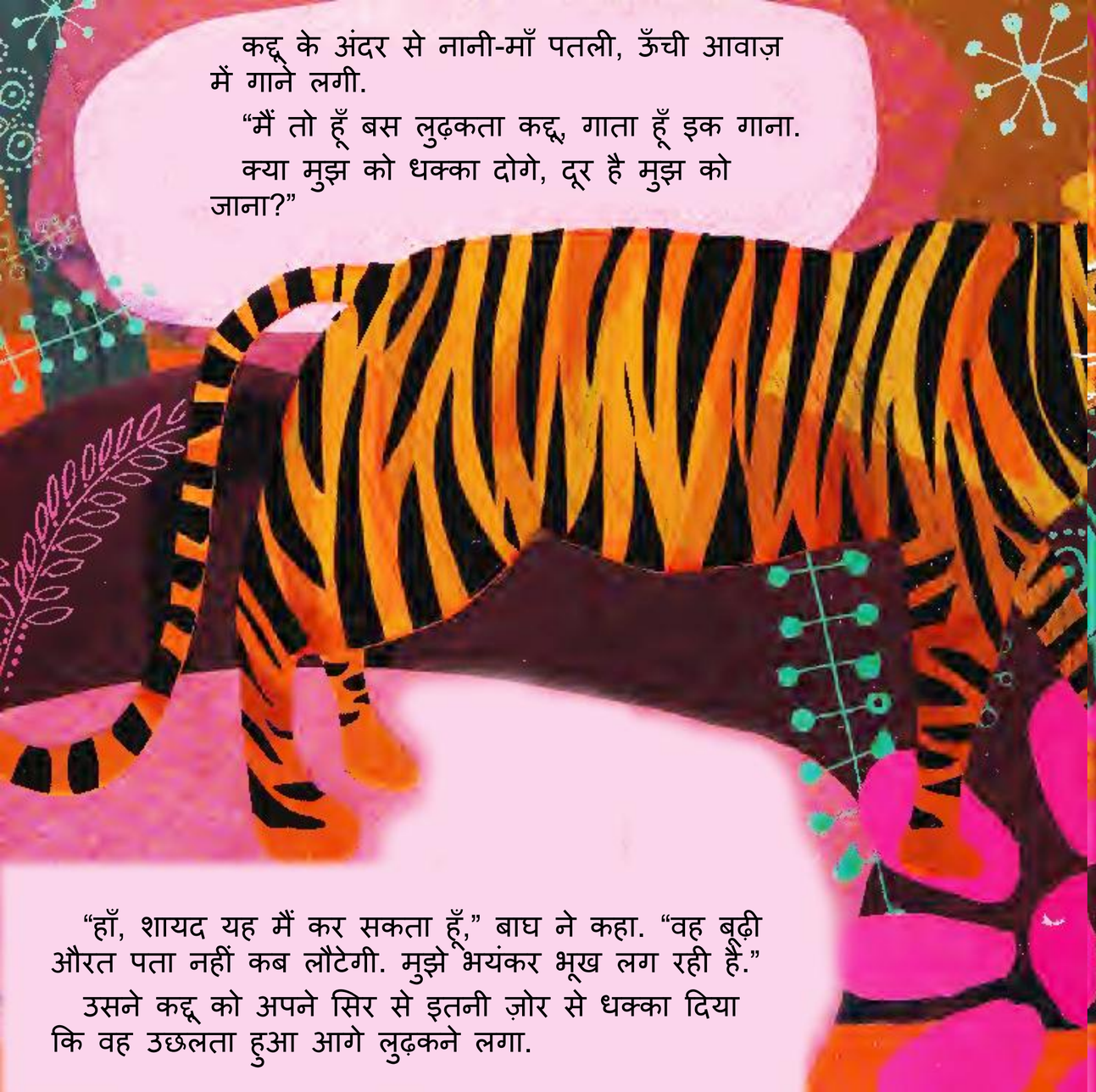

“हाँ, शायद यह मैं कर सकता हूँ,” बाघ ने कहा. “वह बूढ़ी औरत पता नहीं कब लौटेगी. मुझे भयंकर भूख लग रही है.”

उसने कद्दू को अपने सिर से इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि वह उछलता हुआ आगे लुढ़कने लगा.

दड़ाम-दड़ाम, कद्दू उछला.

“बाप रे बार!” नानी-माँ ने कहा. “बाल-बाल बच गई! यह तो अच्छा है कि कद्दू अंदर से नर्म है अन्यथा मेरी हड्डियाँ ऐसे हिल रही होतीं जैसे झुनझुने में पत्थर.” और उसने इमली के साथ थोड़े से चावल खाये.

कुछ देर बाद कद्दू जंगल के उस हिस्से में पहुँच गया जहाँ भालू प्रतीक्षा कर रहा था. उसे भी पता न था कि कद्दू क्या था.

"कैसा अनोखा जीव है!" वह चिल्लाया. उसने कद्दू को हर तरफ से सूँघा, लेकिन क्योंकि कद्दू को गोंद से चिपका कर बंद किया हुआ था वह नानी-माँ की गंध सूँघ न पाया.

नानी-माँ गाने लगी, "मैं तो हूँ बस लुढ़कता कद्दू, गाता हूँ इक गाना. क्या मुझ को धक्का दोगे, दूर है मुझ को जाना?"

"हाँ, शायद यह मैं कर सकता हूँ," भालू ने कहा. "वह बूढ़ी औरत पता नहीं कब लौटेगी. मुझे भयंकर भूख लग रही है." उसने अपने पंजे से कद्दू को ज़ोर से मारा और कद्दू घूमता हुआ जंगल के रास्ते पर चलता गया.

चट-पट, चट-पट, कद्दू घूमा.

"बाप रे बार!" नानी-माँ ने कहा. "बाल-बाल बच गई!"

"यह तो अच्छा है कि कद्दू की दीवारें चौड़ी और मज़बूत हैं अन्यथा मैं किसी दरवेश समान चक्कर खाने लगती. और उसने इमली के साथ थोड़े और चावल खाये.

उछलता और घूमता हुआ कद्दू आगे चलता गया और लगभग जंगल के किनारे तक पहुँच गया.

बस थोड़ा समय और! नानी-माँ ने सोचा.

और तभी कद्दू रास्ते के उस भाग में पहुँच गया जहाँ लोमड़ी नानी-माँ की प्रतीक्षा कर रही थी.

"अब यह क्या है?" कद्दू को चारों ओर सूँघते हुए वह चिल्लाई.

नानी-माँ गाने लगी, "मैं तो हूँ बस लुढ़कता कद्दू, गाता हूँ इक गाना. क्या मुझ को धक्का दोगे, दूर है मुझ को जाना?"

लेकिन चालाक लोमड़ी ने कहा, "मुर्गियाँ चुराने के लिए मैं एक सौ एक बार चोरी-छिपे गाँव में गई थी लेकिन गाने वाला कद्दू मैंने आजतक नहीं देखा! यहाँ तो कोई विचित्र बात हो रही है." उसने अपने तेज़, नुकीले दाँतों से कद्दू को ऊपर से पकड़ लिया और उसे ज़ोर से इधर-उधर झकझोरा जब तक कि गोंद चटक नहीं गई और टाँके खुल नहीं गए.

नानी-माँ बाहर आ गिरी, *धप-धपाश*!

"अह, नानी-माँ!" लोमड़ी ने दाँत निपोरते हुए कहा.

"आप कितनी मोटी और अच्छी लग रही हैं! इस कद्दू के अंदर आप क्या कर रही थीं?"

"तुम ने मुझे पकड़ ही लिया," नानी-माँ ने कहा. "अब उचित है कि तुम मुझे खा जाओ. लेकिन मेरा एक निवेदन है. इसके पहले कि तुम मुझे खाना शुरू करो, क्या मैं अपना एक अंतिम गीत गा लूँ?"

"ओह, ठीक है," लार टपकाते हुए लोमड़ी ने कहा. "बस बहुत लंबा गीत न गाना."

"मैं ऐसा नहीं करूँगी," नानी-माँ ने कहा और ऊँची आवाज़ में गाने लगी,

"कालू, भोलू *तो-तो-तो*!

कालू, भोलू, मेरे पास दौड़ो!

कालू, भोलू, मेरी मदद करो!"

गाँव में कालू और भोलू ने नानी-माँ की आवाज़ सुनी. वह समझ गए कि नानी-माँ मुसीबत में थी. आँधी की तरह तेज़, *हूश-हूश,* दौड़ते हुए वह जंगल की ओर भागे. दाँत खोलकर वह भयानक रूप से गुर्रा रहे थे.

उन्होंने लोमड़ी को भगा दिया. उसे इतना डरा दिया कि वह फिर कभी उस ओर नहीं आई.

नानी-माँ ने अपने कुत्तों को बहुत प्यार किया.

“धन्यवाद, बच्चों!” उसने कहा. “तुम ने मेरी जान बचाई.”

“*घीयू! घीयू!*” कालू और भोलू ने लज्जाते हुए कहा. “यह तो ज़रा सी बात थी!”

जब वह अपने घर पहुँच गए तो नानी-माँ यह देख कर बहुत प्रसन्न हुई कि उसका बग़ीचा सब्ज़ियों से भरा हुआ था. कालू और भोलू ने बहुत अच्छे से अपना काम किया था.

नानी-माँ ने सबसे ताज़ा सब्ज़ियाँ चुन कर तोड़ लीं और बहुत स्वादिष्ट खिचड़ी पकाई, जिस में उस ने दाल और चावल और गोभी और मटर और बढ़िया सफेद आलू मिलाए थे.

और सब ने मिलकर उसे खाया.

समाप्त